Q 3 B]

3B.1] चूंकि सरकार ने आतंकवादियों से वार्ता करने का विकल्प प्रदान किया है। अतः हमें आपसी वार्ता करनी चाहिये ताकि बंधकों को छुड़ाया जा सके।

3.B.2] प्रकरण में उल्लेख है कि आतंकवादियों ने एक बंधक की हत्या कर दी है। अतः सैन्य कार्यवाही में अन्य बंधकों की जान का खतरा हो सकता है। अतः इन परिस्थितियों में सैन्य कार्य नहीं करना उचित नहीं होगा।

3B.3] प्रकरण में इस घटना की संवेदनशीलता स्पष्ट दिखाई देती है। अतः मीडिया को प्रकरण की संवेदनशीलता का परिचय देते हुए अपनी भूमिका का निर्वहन करना चाहिये अथवा नहीं।

3B.4] वार्ता का प्रयास विफल होने की स्थिति में बंधकों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर कठोर कार्यवाही करना चाहिये।

3B.5] बंधकों की सुरक्षित रिहाई के लिए अन्य विकल्पों को भी अपनाना चाहिये। जैसे आतंकवादियों के संबंधित देशों का दबाव, आतंकियों की पृष्ठभूमि व उनके हितों की वकालत करने वाले नेताओं से अपील करना चाहिये।

Q 3

3A] 1 भ्रष्टाचार को बढ़ाने में निम्नांकित निम्नलिखित कारक है-

- कानूनों का अभाव।
- नैतिक मूल्यों में गिरावट
- नैतिक प्रतिस्पर्धा में कमी

3A.2] भ्रष्टाचार को रोकने के लिए निम्नलिखित प्रावधान है

- भ्रष्टाचार रोधी संस्था - जैसे CVC, लोकपाल, -
- लोक सेवा गारंटी बिल
- बेनामी संपत्ति निषेध अधि. 1988
- भ्रष्टाचार निवारण अधि. 1988

3A.3] काले धन के संचय होने के प्रमुख कारण।

1. राजनीतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार
2. भाई भतीजावाद एवं
3. आर्थिक एवं सामाजिक असमानता
4. धन एवं संपत्ति की अत्यधिक लिप्सा
5. कठोर कानून एवं राजनीतिक इच्छा शक्ति का अभाव आदि।

2R] किसी मनोवैज्ञानिक विषय के पक्ष या विपक्ष में - सकारात्मक या नकारात्मक भाव की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते हैं। मनोवृत्ति को एक मानसिक स्थिति के रूप में समझा जा सकता है। अर्थात यह वह मानसिक अवस्था है जिसे विचारों को प्रभावित करता है।
यह एक काल्पनिक प्रत्यय है क्योंकि उसका प्रत्यक्ष बोध संभव नहीं है।

मनोवृत्ति के प्रकार : प्रभाव के आधार पर मनोवृत्ति दो प्रकार -
1. सकारात्मक मनोवृत्ति
2. नकारात्मक मनोवृत्ति

समाज में मनोवृत्ति का निर्माण - समाज में मनोवृत्तियों निर्माण निम्न लिखित माध्यमों से निर्मित किया जा सकता है

मनोवृत्ति निर्माण
- → समाजीकरण - परिवार, मित्र समूह, संगठन।
- → जन्म जात - आनुवांशिकता के गुण
- → सह कर्मियों एवं समुदाय से प्रेरणा।
- → नीति परक एवं आध्यात्मिक चिंतन का विकास
- → मानसिक अन्तः क्रिया।

मनोवृत्ति नैतिक जीवन और प्रशासनिक जीवन में कार्य के सम्पादन में नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन में तथा पारदर्शिता बनाने में अहम भूमिका निभाती है।

20] व्हिसल ब्लोअर वह व्यक्ति होता है जो भ्रष्टाचार तथा अन्य अनैतिक कार्यों का खुलासा करता है व भ्रष्टाचार या धोखाधड़ी की सूचना सम्बन्धित विभाग की एजेंसी को देता है।
भारत में व्हिसल ब्लोअर संरक्षण 2011 के अधिनियम बनाया गया है। इसमें कुल 6 अध्याय एवं 31 धाराएं हैं। यह कानून भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए सूचना के अधिकार का पूरक है।
इस अधिनियम में व्हिसल ब्लोअर की परिभाषा नहीं दी गयी है, बल्कि इसे एक शिकायत कर्ता के रूप में स्पष्ट किया है।
अधिनियम में उसके संरक्षण और पहचान की गुप्त रखने का प्रावधान किया गया है। तथा साथ ही न्यायालय में अपील करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

व्हिसल ब्लोअर की भूमिका: प्रशासन और नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने में अहम भूमिका है।

1. संगठन में होने हुए भ्रष्टाचार की जानकारी देना।
2. भ्रष्टाचार से संबंधित साक्ष्य का एकत्रण
3. भ्रष्ट अधिकारियों पर दबाव बनाये रखने में
4. भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों को
5. कार्यालय एवं संगठन की कार्य पद्धति में पारदर्शिता एवं बेहतर बनाने
6. ये सरकार एवं सरकारी कर्मचारियों, विभागों के भाव में कार्य करते हैं और निष्पक्ष भाव धारण अपने कुशासन दूर करते हैं।

इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि व्हिसल ब्लोअर महत्वपूर्ण व्यक्ति है उसका संरक्षण भ्रष्टाचार को न्यूनतम करने में अहम भूमिका है।

उत्तर] सांवेगिक बुद्धि अर्थात् भावनाओं, जैसे अपनी तथा दूसरे व्यक्ति के संवेगों का परिशुद्ध मूल्यांकन, प्रकटीकरण तथा संवेगों का नियमन आदि का एक समुच्चय ही यह बुद्धि का भावात्मक पक्ष है।

अवधारणा : सैलोवी तथा मेयर ने सांवेगिक बुद्धि में चार योग्यताओं का होना बताया है। ये योग्यताएं हैं -

चार योग्यताएं —
1. भावनाओं को प्रत्यक्ष करने की क्षमता
2. चिंतन को प्रेरित करना
3. भावनाओं को समझना
4. भावनाओं का प्रबन्धन करना।

महत्व - प्रशासन में सांवेगिक बुद्धि की महत्ता निम्न है -
- कार्य स्थल में निर्णय की स्पष्टता प्रदान करना एवं व्यावहारिक पद्धति को अपनाना
- सामाजिक कल्याण को मूर्त रूप प्रदान करना
- जन कल्याण के लिए निर्धारित आर्थिक नीतियों का बेहतर एवं सफल क्रियान्वयन

सुदृढ़ परिदृश्य - सांवेगिक बुद्धि का प्रकटीकरण निम्न परिस्थितियों में पाया जा सकता है -
- परिस्थिति, व्यक्ति एवं वातावरण का सामूहिक समायोजन हो
- संयुक्त कार्यों के निष्पादन में
- तनाव एवं दबाव ग्रस्त स्थितियों में त्वरित निर्णय

अतः तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर कह सकते हैं कि प्रशासनिक दायित्वों एवं चुनौतियों के सामना में सांवेगिक बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान है।

20] संयुक्त राष्ट्र भ्रष्टाचार निरोधी अभिसमय (UNCAC) एक बहुपक्षीय संधि है, जिस पर संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने 2003 में सहमति व्यक्त की थी।

- यह विश्व की एक मात्र संधि है जो वैश्विक स्तर पर है।
- संधि के अनुसार संयुक्त राष्ट्र सभी सदस्य देशों से अपेक्षा करता है कि वे भ्रष्टाचार निरोधी नियम उपायों को लागू करें।
- यह मुख्यतः पाँच क्षेत्रों पर केन्द्रित है।
  1. भ्रष्टाचार से बचाव
  2. कानून बनाना और लागू करना
  3. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग
  4. पूंजी की वसूली
  5. तकनीकी सहायता एवं सूचना का आदान प्रदान
- वर्तमान में इस अभिसमय में 186 देश हैं जिनका आठवाँ सम्मेलन 2019 में 'अबु धाबी' में सम्पन्न हुआ।
- इस अभिसमय का आयोजन अगली बार 'मिस्र' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।
- UNCAC के अन्तर्गत 8 अध्याय और 71 अनुच्छेद हैं।
- <u>भारत</u> <u>और</u> <u>UNCAC</u>: भारत वर्ष 2011 में इस अभिसमय का हस्ताक्षरकर्ता बना। भारत में भी भ्रष्टाचार-निरोध सम्बन्धी कठोर कदम का निर्माण हुआ।

निष्कर्ष: यह कहा जाता है कि यह एक विश्वव्यापी सम्मोही उपकरण के रूप में कार्य करती है जो भ्रष्टाचार रूपी असंख्य समस्याओं को आत्मसात करने में सहायक सिद्ध हुई है।

उत्तर] भारतीय समाज विविधताओं एवं बहुसंस्कृतियों से युक्त, अनेकों मान्यताओं, परम्पराओं एवं अनुक्रियाओं से संयुक्त है। इन जटिलताओं में नैतिक एकरूपता की स्थापना एवं नैतिक मूल्यों का समावेश अत्यंत कठिन कार्य है। इसी से समाज में व्याप्त अनैतिकता, भ्रष्टाचार, हिंसा, कुरीति-अन्धविश्वास पनपती जा रही है।

इन समस्याओं एवं चुनौतियों से निपटने के लिए तथा समाज में नैतिक तत्वों के विकास हेतु सरकारी एवं निजी के साथ-साथ सामूहिक प्रयासों की दरकार है।

उपाय :- सरकारी स्तर - विधि निर्माण कर आपराधिक कृत्यों की रोकथाम - जैसे - दहेज प्रथा निषेध अधि. 1961।

- शासन - प्रशासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही - जैसे - सूचना का अधिकार 2005.
- शिक्षा का विकास, प्रचार एवं नैतिक शिक्षा का प्रवेश

सामूहिक प्रयास - NGO, CSOs के माध्यम से -

- जन जागरूकता - जन कल्याण - जन चेतना का विकास
- उच्च नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों का प्रचार प्रसार
- प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा पुरस्कार प्रदान करना

व्यक्तिगत / निजी उपाय - निष्ठा, दया, वैज्ञानिकता एवं आध्यात्मिकता का विकास करना।

- सादा जीवन : उच्च विचार - अवधारणा का पालन।

इन उपायों के अतिरिक्त जन जागरूकता, जन संवाद जैसे कार्यक्रमों, सम्मेलनों एवं रैलियों का संचालन करके भारतीय समाज में नैतिकता के तत्वों का समावेश किया जा सकता है और आदर्श एवं समाज का विकास हो सकता है

उत्तर] भ्रष्टाचार एक वैश्विक एवं शाश्वत समस्या है। यह अध्ययनों से पता चलता है कि प्राचीन वेदों एवं ग्रन्थों में शासन तंत्र एवं लोक जीवन में किसी न किसी रूप में दिखाई देती है। भ्रष्टाचार के अर्थ, एवं कारणों की संक्षिप्त व्याख्या निम्न लिखित है:-

अर्थ- डेविड एच बेयले के अनुसार - प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ के लिये जब जानबूझकर अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया जाता, तो उसे भ्रष्टाचार कहा जाता है।

जैसे- रिश्वत, आतंक, घोटाला, कमीशन लेना, धोखा आदि- भ्रष्टाचार के उदाहरण है।

कारण - भ्रष्टाचार किसी एक कारण से नहीं पनपता। बल्कि इसमें कई कारणों का एक समुच्चय निहित है।

**भ्रष्टाचार - कारण**

**सामाजिक**
- जाति, भाई-भतीजावाद
- सामाजिक प्रतिमान
- भौतिक स्वामित्व की प्रतिष्ठा

**आर्थिक**
- न्यूनतम वेतन
- न्यूनतम जीवन स्तर
- महंगाई - बढ़ती जरूरतें

**प्रशासनिक**
- संस्थाओं में पारदर्शिता
- गठजोड़
- प्रशासकीय नीतियों में कमियां

**राजनीतिक**
- राजनीतिक प्रश्रय
- कमीशनखोरी
- पतन

स्वतंत्रता के पश्चात राजनीतिक सत्ता एवं नौकरशाही में गिरावट आया तथा पिछले कुछ वर्षों में यह स्पष्ट हो गया कि भ्रष्टाचार का जन्म सत्ता के उच्च शिखरों में होता है। और धीरे-धीरे सम्पूर्ण व्यवस्था में फैल जाता है।

2L]. प्रशासन में सुशासन और नैतिक शासन जैसी अवधारणाएं शासन का ही अर्थ विस्तार है।

- अपने आदर्श स्वरूप में प्रशासन उन सभी विशेषताओं से युक्त होता है जिन्हें अभी सुशासन और नैतिक शासन के रूप में निरूपित किया जाता है।

• प्रशासन के आधारभूत मूल्य: चूंकि शासन का आदर्श रूप मूर्त नहीं हो पाया इसीलिये इसकी परिधि में विस्तार हुआ। स्वरूप के साथ-2 कई अन्य तत्वों का समावेश हुआ।

• प्रशासन की 8 आधारभूत। निर्धारित इस प्रकार निम्न हैं:

**आधारभूत मूल्य**

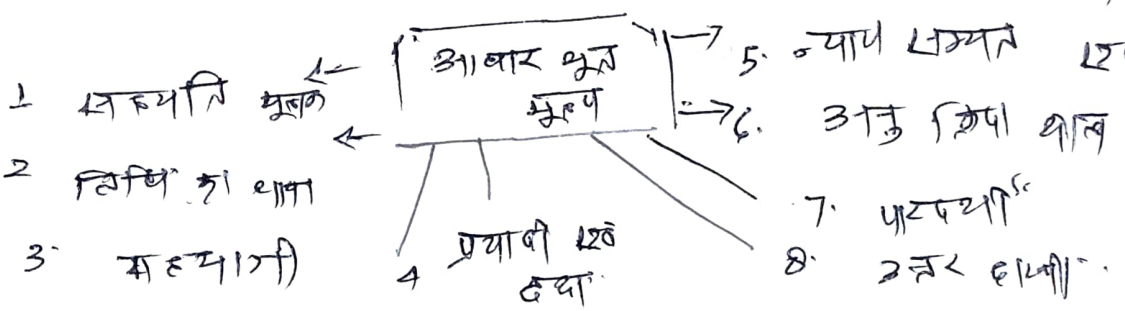

1. सहमति मूलक
2. विधि का शासन
3. सहभागी
4. प्रभावी एवं दक्ष
5. न्याय सम्मत एवं समावेशी
6. अनुक्रियाशील
7. पारदर्शी
8. उत्तरदायी

उत्तरदायी :- प्रशासन में उत्तरदायित्व का होना कर्तव्य! बोध को प्रदर्शित करता है। यह स्वप्रेरणा का कार्य करता है।

पारदर्शिता - सरकार एवं प्रशासन की नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया के संचालन में जनता की स्वतंत्र एवं सरलतम पहुंच से है।

प्रशासन में उत्तरदायित्व एवं पारदर्शिता के अभाव में शासन-तंत्र पर जनता का अविश्वास प्रकट हो जाता है अतः इन आधारिक मूल्यों का समावेश अत्यंत आवश्यक है।

2(ख)] तटस्थता एवं अस्मयपक्ष वादिता एक ऐसे मूल्य - जो बिना किसी पूर्वाग्रह के वस्तुनिष्ठ आधार पर तार्किक रूप से चलने को प्रेरित करे तथा किसी को मनमाने ढंग से लाभ पहुँचाने पर रोक लगाये अर्थात ये दोनों मूल्य 'प्राकृतिक न्याय' के सिद्धांत का अनुसरण करते हैं।
जैसे - एक सिविल सेवक हेतु किसी क्षेत्र के विकास के लिये सभी स्टेकहोल्डर्स यथा - निर्वाचित प्रतिनिधि, NGO, उद्योगपतियों इत्यादि से अपने अधिकार के अन्तर्गत सम्पर्क स्थापित करना किन्तु किसी के प्रति व्यक्तिगत झुकाव न रखना 'तटस्थता' का ही परिचायक है।

अस्मयपक्ष वादी: अस्मयपक्ष वादी का तात्पर्य किसी दल, संगठन, समूह एवं समितियों के आदर्शों, सिद्धांतों, मूल्यों एवं विचारों के प्रति असंबद्धता से है।
जैसे - भारतीय लोक प्रशासन में लोकसेवकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्य निष्पादन में संविधान, विधि, नियमों, प्रशासनिक निर्देशों का पालन करें न कि किसी प्रकार - संगठन या समूह के विचारों, मूल्यों, कार्यों एवं सिद्धांतों का समर्थन या आलोचना करें।
उदाहरण स्वरूप - कृषि मंत्री या दल के समर्थन से लोकसेवकों ने अस्मयपक्ष वादिता का ही परिचय दिया है।
उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि तटस्थता एवं अस्मयपक्ष वादी भारतीय लोक प्रशासन के महत्वपूर्ण गुण / मूल्य हैं जो कर्तव्य निर्वहन में सहायक हैं।

2)] अंत: प्रेरणा जिसे सामान्यतया अन्तर्मन की पुकार / आवाज भी कहा जाता है। अंत: प्रेरणा का तात्पर्य उस आंतरिक प्रेरणा से है जो हमारे किसी व्यवहार के नैतिक या अनैतिक होने को बताता है।

- अत: अंत: करण की आवाज पवित्र मानी है तथा यह नैतिक निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है।
- चूंकि यह बाह्य दबाव एवं लाभों से निर्देशित नहीं होती इसीलिए यह किसी कृत्य के नैतिक होने / या अनैतिक होने का निर्णय सरलता से कर पाती है।

गांधी जी 'अन्तर आत्मा' की आवाज को सर्वोच्च-निर्देश मानते थे।

उदाहरण- चोर जब चोरी करता है तो उसे कोई नहीं देख रहा होता है, तब भी अंत: करण की आवाज उसे बताती है कि वह गलत कर रहा है।

लोक प्रशासन में नैतिक मार्गदर्शक के रूप में अंत: प्रेरणा

लोक प्रशासन में प्रतिदिन नयी चुनौतियां एवं दुविधाओं के बीच निर्णय प्रक्रिया अस्पष्ट होने की स्थिति में अंत: प्रेरणा 'प्रकाश पुंज' की भूमिका निभाता है।

मार्गदर्शी
- नैतिक दुविधा में
- आपातकालीन स्थिति में
- शून्यता / अस्पष्टता में
- जवाबदेहता के संघर्ष में

लोक प्रशासन ही नहीं जीवन प्रबंधन में भी अंत: प्रेरणा नैतिक रूप से मार्गदर्शन प्रदान करती है। गांधी जी इस प्रेरणा को पथ प्रदर्शक निर्देश मानते थे।

2]. मूल्य का अर्थ - मूल्य शब्द नैतिक आदर्शों से होता है। मूल्य आदर्श व्यवहारों का समुच्चय होता है। यह समाज में नैतिकता स्थापित करने हेतु व्यक्ति के व्यवहार पर निर्दिष्ट करता है। उदाहरण स्वरूप नीचे शांति, न्याय, सत्य, अहिंसा, आदि, ईमानदारी और स्वच्छता कुछ प्रमुख मूल्य है।

<u>मूल्यों का विकास</u> - मूल्यों का विकास निम्न विभिन्न माध्यमों से किया जा सकता है।

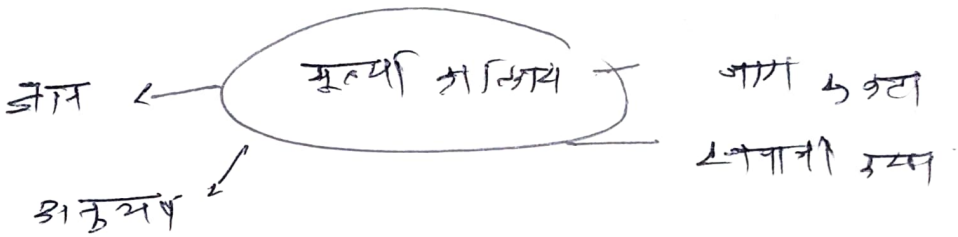

- मूल्यों का विकास
  - ज्ञान
  - अनुभव
  - त्याग करना
  - व्यवहारी ज्ञान

<u>मूल्यों के आयाम</u> : विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा, समय परिस्थिति के अनुरूप आयाम -2 आयामों में वर्गीकृत पाया जाता है।

मूल्यों के आयाम →
1. सार्वभौमिक मूल्य - जैसे - सत्य, अहिंसा
2. व्यक्तिगत / निजी मूल्य - करुणा, प्रेम, दया
3. संस्थागत मूल्य - तटस्थता, अनुशासन

<u>सार्वजनिक / सार्वभौमिक मूल्य</u> : ये वे मूल्य हैं जो देश काल की सीमाओं से परे हर समय, हर स्थान पर स्वीकार्य रहते हैं। जैसे सत्य, अहिंसा, ईमानदारी आदि।

<u>व्यक्तिगत / निजी मूल्य</u> - उनमें परिवर्तन शीलता पायी जाती है। मूल्यों का अर्थ अलग-2 व्यक्तियों में अलग-2 होते हैं।

2 म] जैन धर्म के दर्शन में पांच महाव्रतों की चर्चा की गयी है। उन व्रतों में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य सम्मिलित है। अहिंसा का व्रत जैन धर्म में सर्वाधिक प्रमुख क्योंकि यह सभी जीवों में दया, करुणा और प्रेम को जागृत करता है। अहिंसा का महत्व सभी धर्मों में है।

आहिंसा का महत्व - नैतिक मूल्यों में मानवीय जीवन का एक विशेष गुण जो समस्त जीवों के कल्याण में सहायक है। अहिंसा एक विस्तृत अवधारणा है जो किसी भी रूप में हिंसा का निषेध करता है। मन, वचन, कर्म तीनों ही स्तरों में किसी भी प्रकार की हिंसा किया न जाए।

प्रासंगिकता - अहिंसा का गुण सम्पूर्ण मानवता एवं जीव जगत का कल्याण करने की क्षमता रखता है।

- विश्व में बढ़ रहे आतंकवाद, हिंसा, संघर्ष को रोकने और विश्व बंधुत्व एवं शांति स्थापना में इसका प्रमुख योगदान हो सकता है।

आलोचना - आधुनिक युग द्वारा इसकी आलोचना इस आधार पर की जाती रही है कि मनुष्यों की दृष्टि से यह व्यवहार उचित नहीं। असुरक्षा की स्थिति में हिंसात्मक कार्य करने होते हैं। चूंकि जैन धर्म पूर्णतः अहिंसावादी है। कृषि और युद्ध की मनाही करता है। इसमें अहिंसा का पालन संभव नहीं। फिर भी वर्तमान समय में यह उतना ही प्रासंगिक और विचारणीय है।

2 ब] जैन दर्शन में 'अनेकांतवाद' सिद्धांत की चर्चा की गयी है। इस सिद्धांत को 'स्यादवाद' का सिद्धांत भी कहा जाता है। जैन धर्म के अनुसार कोई भी व्यक्ति निश्चित तौर पर सत्य - किसी एक पक्ष पर आसानी से नहीं पहुंच पाता। उसके अनुसार किसी भी वस्तु। धर्मों के अनंत धर्म-आयाम होते हैं। ये सात आयाम उसे आत्म-शीघ्रता के व्यवहार पर ले जाती हैं। ये आयाम उसे तार्किक रूप से निश्चित ज्ञान में सक्षम बनाती है। इसे 'स्यादवाद' या सप्तभंगी सिद्धांत भी कहा जाता है। ये जैन धर्म का दार्शनिक पक्ष माना गया है। इसे सप्तभंगी नय कहा जाता है।

सप्तभंगी नय

1. एक अपेक्षा से वस्तु है
2. एक अपेक्षा से वस्तु नहीं है
3. एक अपेक्षा वस्तु है भी नहीं भी है
4. कुछ कहा नहीं जा सकता
5. वस्तु है और कुछ कहा नहीं जा सकता
6. वस्तु नहीं है और कुछ कहा नहीं जा सकता
7. वस्तु है भी, नहीं भी, और कुछ कहा भी नहीं जा सकता है।

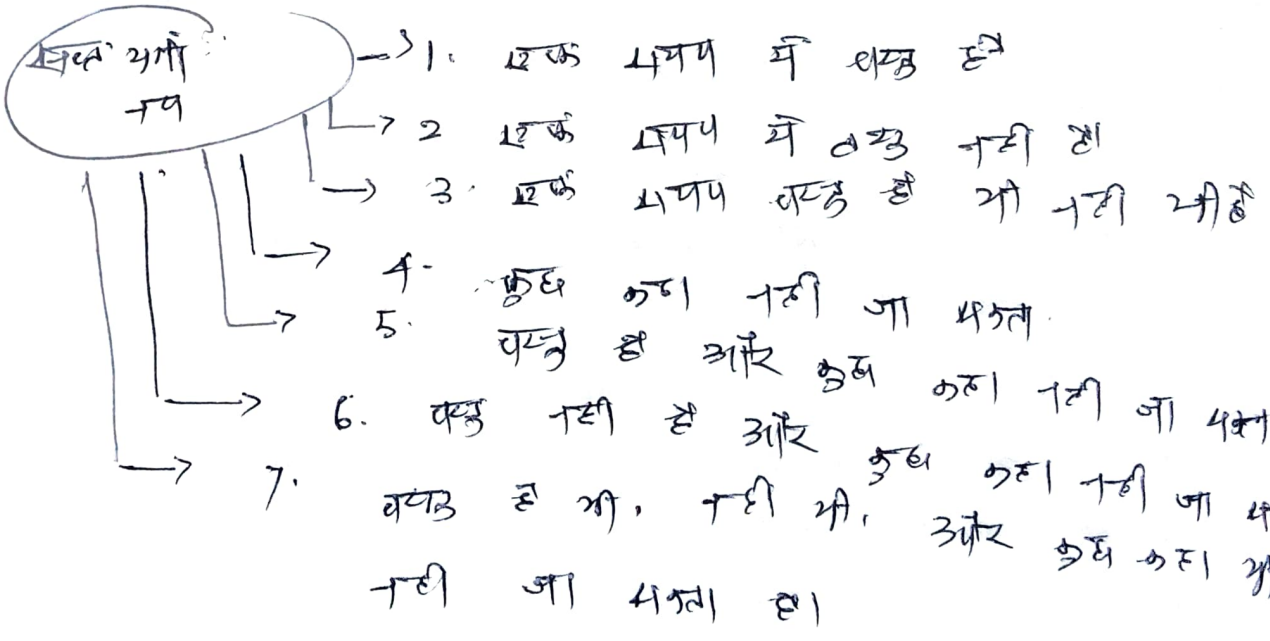

इन सप्तभंगी सिद्धांत, ज्ञान के 'सापेक्षता' के सिद्धांत के रूप में माने गये हैं। इन सिद्धांतों का उपयोग तार्किक-निर्णयों की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

21=] प्रतीत्य समुत्पाद बौद्ध धर्म का आधार सूत्र एवं केन्द्रीय सिद्धांत है. जिसे 'कार्य-कारण' सिद्धांत कहा जाता है।
प्रतीत्य समुत्पाद दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसमें - प्रतीत्य का अर्थ अथवा शरण या आश्रित रहकर तथा - समुत्पाद का अर्थ है. उत्पाद। इसका वास्तविक अर्थ यह है कि एक दुःख की उत्पत्ति दूसरे दुःख से होती है।
प्रतीत्य समुत्पाद बुद्ध के चार आर्य सत्य पर आधारित है। बुद्ध ने इसे सम्पूर्ण जगत पर लागू किया। उनके अनुसार - एक वस्तु के विनाश के पश्चात दूसरे की उत्पत्ति होती है। प्रत्येक घटना के पीछे कार्य-कारण का संबंध है। कार्य - अकारण नहीं होता है। कारण के समाप्त होने पर कार्य भी समाप्त हो जाता है।

- प्रतीत्य समुत्पाद में 12 'कारणों' की एक श्रृंखला बताई गई है. जिसे 'द्वादश निदान' भी कहा गया है।

∴ जैसे - अविद्या → अज्ञान → संस्कार → विज्ञान → नामरूप → षडायतन → स्पर्श → वेदना → तृष्णा → उपादान → भव → जाति → जरा - मरण।.

- जरा - मरण में ही दुःख मिलता है।
- तीसरे आर्य सत्य में दुःखों का कारण अविद्या है।
- अविद्या का समाधान विद्या से संभव है। अज्ञानता को ज्ञान से समाप्त किया जा सकता है।
- प्रतीत्य समुत्पाद को 'मध्यम मार्ग' अर्थात शाश्वतवाद एवं - उच्छेदवाद के बीच की अवस्था है। इसे मध्यम प्रतिपदा कहा जाता है।

बौद्ध दर्शन में इस सिद्धांत को धर्म का विधान भी माना जाता है। धर्म को जानना प्रतीत्य - समुत्पाद को जानना है।

2E] डॉ बी आर अम्बेडकर जो कठिन परिस्थितियों एव कठिन संघर्ष का सामना करके जो और शिक्षा के शिखर पर पहुँचे, उन्होंने उन्होंने समाज मे व्याप्त असमानता और अन्याय के निष्कर्ष पर पहुँचे। समाज मे व्याप्त इन अनेका दोषों भागों मे जिन प्रत्यक्ष दुखद अनुभूतियों को अर्जित किया, वो ही उनके सामाजिक दृष्टिकोण का आधार बन गई।

<u>सामाजिक दृष्टिकोण</u> :- समाज मे व्याप्त असमानता एव अन्याय चातुर्वर्ण व्यवस्था की देन है।

- वर्ण व्यवस्था का जन्म आधारित स्वरूप चातुर्वर्ण वर्ण की देन है।
- ये अन्याय के स्थान पर न्याय की स्थापना के पक्षधर थे
- इनके अनुसार, न्याय सामान्यतया स्वतंत्रता, और महत्व का दूसरा नाम है।
- सामाजिक न्याय की अवधारणा ऐसी जीवन पद्धति से है जिसके अनुसार समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उचित स्थान मिलना चाहिए।
- उचित स्थान का पैमाना अर्थ एव योग्यता का गुण है, जिसके अनुसार किसी को सही सही सामाजिक प्रतिष्ठा मिले।

∴ सामाजिक न्याय की अवधारणा के मूल तत्व –
- समस्त मानव प्राणियों की समानता
  - स्त्री – पुरुष के प्रति समान प्रतिष्ठा
  - कमजोर, एवं निम्न जाति के लोगो के प्रति सम्मान की भावना
  - आर्थिक शुद्ध हानी
  - सामान्य मानव अधिकारों के प्रति निष्ठा
  - सहयोग तथा सामाजिक सद्भाव की प्रमुखता

इसके अतिरिक्त अम्बेडकर की सामाजिक न्याय की यह धारणा विधि के शासन, तथा समता नागरिक संहिता को आधार मानता है। इसप्रकार भारतीय संविधान अंबेडकर के सामाजिक न्याय के दर्शन को परिलक्षित करता है।

20] 'ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया'

कबीर की इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले नेहरू के युग प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी -

दार्शनिकों एवं विचारकों में सबसे प्रबुद्ध और जिन्हें वो उन्हें भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन का अद्भुत ज्ञान था, वो दोनों दर्शनों की तुलनात्मक व्याख्या करने में समर्थ थे।

उन्होंने भारत विषय अपनी प्रसिद्ध कृतियाँ जैसे 'इंडियन फिलॉसफी', हिन्दू व्यू आफ लाइफ, आदि में प्रकाशित किया।

स्वामी विवेकानंद की तरह वे भी वेदांत दर्शन से प्रभावित थे।

<u>दार्शनिक</u> <u>विचार</u>: शंकराचार्य के 'अद्वैतवादी' सिद्धांत को नये स्वरूप में परिभाषित किया।

- शंकर ने 'आत्मा' को 'सत्य' माना, वहीं इन्होंने 'आत्मा' को 'जीव' माना।
- धर्म का लक्ष्य - अंतिम सत्य का अनुभव है।
- दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, बल्कि जीवन को को बदलना।
- ज्ञानी के प्रश्न, की व्याख्या के बाद ज्ञान के प्रश्न से साक्षात् प्राप्त हो जाता है।
- दर्शन शास्त्र एक रचनात्मक क्रिया है।
- अजर आत्मा का कभी नाश नहीं होता।
- प्रत्येक व्यक्ति ही ईश्वर की प्रतिछाया है।
- एक शताब्दी का दर्शन ही, दूसरी शताब्दी का सामान्य ज्ञान होता है।
- दर्शन का आलोचना मनुष्य को नास्तिकता की ओर झुका देता है।

डॉ. राधाकृष्णन साधारण आदमी के निष्पक्ष, मध्यस्थ, उदार, स्पष्ट-कर्तव्यपरायणता, यथार्थ पढ़ने वाला, ईमानदारी और सज्जनता के साकार प्रतिमूर्ति थे।

6.

28] क्रांतिकारी दार्शनिक चिंतक एवं महायोगी श्री अरविंद का जन्म 1872 में कोलकाता में हुआ। पिता की इच्छानुसार आधुनिक शिक्षा दार्जिलिंग के लोरेटो कॉन्वेंट स्कूल में हुई। सात वर्ष बाद इंग्लैंड में जाकर अध्ययन किया। उनके मन में राष्ट्रीयता का बीजारोपण उनके नाना राजनारायण बसु द्वारा गर्व एवं आभा में हुआ।

राष्ट्रीय आन्दोलन का निर्वाह - इंग्लैंड में 'इंडिया मजलिस' के सक्रिय सदस्य एवं मंत्री रहे।

- वे भारत को पवित्र तीर्थ मानते थे
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की निराशा की पृष्ठभूमि में एक- शीतल जल के आत्मघाती क्रियाओं में बदले थे।
- किंतु बाद में कांग्रेस के ढुलमुल रवैये और जनसमूह के आधार में परिवर्तन।
- स्वराज, सक्रिय भागीदारी तथा क्रांतिकारी प्रयासों की आशा।
- राष्ट्रवादी भावनाओं को जागृत करने के लिए रचनात्मक कार्य- पत्रिका - युगान्तर, वंदे मातरम
- गिरफ्तार - अलीपुर बम कांड -1908 - राजद्रोह का केस
- चितरंजन दास ने सहायता की।
- अपने पत्र पत्रिकाओं एवं लेखों से ब्रिटिश हुकूमत को चुनौती दिया।

राष्ट्रवाद का नया चरण - अपने जीवन के आरंभिक वर्षों में ये स्वतंत्रता संघर्ष में सर्वाधिक सक्रिय रहे किंतु जीवन के अवसान काल - भारत में राष्ट्रवाद को नई चेतना प्रदान आध्यात्म की ओर आकर्षित हुए।

विचार प्रवाह - वे जान ऑफ आर्क, एवं, मेजिनी, डिकन्स, लाइक से अपने विचारों में प्रेरित थे। पुस्तक सम्मिलित किये।

श्री अरविंद जी मातृभूमि एवं कर्मभूमि दोनों स्थलों में भ्रमण रहे तथा पांडिचेरी में आश्रम में योग में ध्यान की धारा का आकर्षण बनाये रखी।

2 (B)] गोस्वामी तुलसीदास मध्यकालीन भारतीय में अहित हुए - सगुण भक्ति के राम मार्गी धारा के प्रमुख कवि, संत एवं दार्शनिक थे। उनका जन्म सन् 1532 ई में उप्र के बांदा जिले में हुआ। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों से प्रयाग में गंगा किनारे का भूवर्णन हुआ। उनके चिंतन, दर्शन एवं कृतियों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक विशेषताओं का समावेश मिलता है।

<u>जीवन</u> <u>दृष्टि</u> :- स्वामी जी ने अपनी शिक्षा दीक्षा संत नरहरिदास से ग्रहण की। काशी में रहकर शास्त्रों का अध्ययन किया।

- विदुषी रत्ना वली (पत्नी) ने ज्ञान धर्म की ओर अग्रसर किया।
- समन्वय वादी दृष्टिकोण - साहित्य, कला, दृष्टि।

  उदाहरण - साहित्य सृजन - रामचरित मानस, बरवै रामायण
  - गीतावली, दोहावली, कवितावली,
  - जानकी मंगल - पार्वती मंगल आदि

- <u>कर्म</u> <u>की</u> <u>प्रधानता</u> - उन्होंने ज्ञान से 'कर्म' की महत्ता पर जोर देते हुए लिखा - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
- <u>शैव</u> <u>और</u> <u>वैष्णव</u> - विरोध नहीं समन्वय :- दोनों शाखाओं में अलगाव नहीं बल्कि एक ही शक्ति की बात की।
- <u>राम</u> <u>की</u> <u>भक्ति</u> - राम का संदेश देते हुए श्रीराम नाम की महिमा और महत्ता का वर्णन -

  "राम नाम अवलंब बिनु, परमारथ की आस।
  बिनु उपायों न मिलें, ज्यों बरसत में घास।।"

गोस्वामी तुलसीदास का चिंतन भौतिक वादी संस्कृति से हटकर पारलौकिक था। वे नैतिक मूल्यों और मानवीयता की भावना का निर्माण करने में जोर देते रहे। इसीलिए उनकी महत्ता को स्वीकारते हुए उन्हें आधुनिक युग का सूर्य (आचार्य शुक्ल) कहा गया।

की दो ही जातियां बतायी। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक- विरोधी नहीं। फिर अर्थ इतना विभेद क्यों -
वैज्ञानिक और तार्किक आधारों पर समाज में व्याप्त कुरीतियों का खंडन करते नजर आये।

ऊंच - नीच : समाज में व्याप्त ऊंच नीच के व्यवहार पर अपनी- मे बताया - ऊँच नीच किय विध है भाई।
कर्म- कुकर्म कहा क्या बड़ि ।।'
नीचा। निकृष्ट कर्म करने वालो को नीचा बताया और उत्कृष्ट कर्म करने वालों को ऊंचा बताया।

कर्मकाण्ड - पाखण्डवाद : - धर्म के नाम पर व्याप्त कर्मकाण्ड -पाखण्डवाद के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने सभी धर्मों हिन्दुओं एवं मुस्लिमों को फटकार लगायी - । कंकड़ - पत्थर जोड़ के मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।
उन्होंने बताया ईश्वर मनुष्य के सब कर्मों से परिचित है। और अन्तर्मन की भावनाओं को समझता है।
जीते के पथ पावन करे, सो ही मानव मुल्ला है।
पंडितो पर पाखण्ड बाद को चलाना देने पर कहा -
'पेड़ - पौदे पर श्रद्धे न जागो, बांचौ पुराण आगत
पत्थर को पूजा करता है, फूलों बिना लय ।।'

आचार विचार एवं धर्म आस्था : कबीर ने अपने उपदेशों एवं शिक्षा से समाज के एकीकरण तथा धार्मिक चेतना को जगाने की कोशिश की।
* हिंसा गया करते नहीं, भात सब्जियां खाई।
कौआ उड़ उड़ जाते हैं, भाते भाजी - खाई।।
कबीर ने समाज से व्याप्त हर बुराई का खंडन किया तथा मानवता मूल्यों में करुणा, दया, प्रेम भाव जगाया।

10] सत्यनिष्ठा का महत्व - जनता एवं प्रशासन में विश्वास बनाती

2. प्रशासन में पारदर्शिता लाती

3. जन कल्याण एवं विकास लाती है।

Q 2

2A]. भारतीय इतिहास के मध्यकाल में चौदहवीं एवं पन्द्रहवीं शताब्दी - के समय उत्तर भारत में लोगों के जीवन में व्याप्त आडंबर, रूढ़िवादिता, पाखंडवाद, जातिवाद को समाप्त करने एवं लोगों के जीवन में भारतीय धर्म दर्शन एवं बंधुत्व को बनाने तथा भक्ति के - सगुण एवं निर्गुण मत भेदों को मिलाने कबीर का आविर्भाव सन 1398 ई. को वाराणसी के काशी में हुआ था। नाथ लहरतारा में जुलाहा नि: संतान दम्पति कमला के पुत्र पर हुआ। बाद में नीरू-नीमा उन्हें अपने साथ घर ले गये।

बाल्यकाल से ही कबीर ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ प्रश्न चिह्न खड़ा करना आरम्भ किया।

उनके सामाजिक चिंतन के प्रमुख विषय निम्नलिखित है -

**सामाजिक चिंतन विषय**

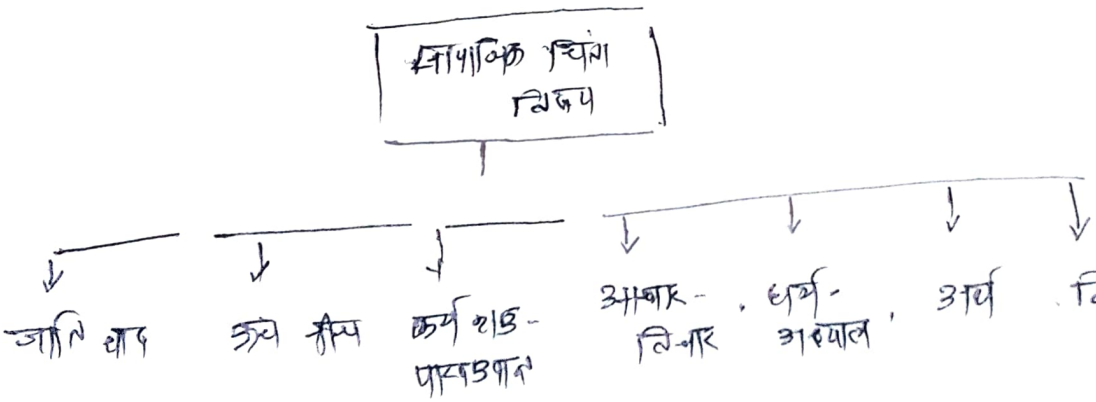

- जातिवाद
- ऊँच नीच
- कर्मकांड-पाखंडवाद
- आचार-विचार
- धर्म-आडंबर
- अर्थ
- विश्व बंधुत्व

जातिवाद : - कबीर ने समाज में व्याप्त 'जातिगत' ऊँच-नीच और बंटवारे का दर्द करते हुए अपनी भावना व्यक्त की - "साईं के सब जीव हैं" अर्थात सब प्राणी उस एक ईश्वर के हैं जो उनका सृजनकर्ता है। फिर जातिवाद के नियमों पर इतना विवाद क्यों। ईश्वर ने स्त्री और पुरुष बनाया।

[G] - सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ 'सत्य का आग्रह' है। गुरु नानक ने अपनी वाणी में 'सत्याग्रह' की चर्चा एक धर्म रूप के नाम से की।

[H] किसी व्यक्ति के किसी अन्य व्यक्ति, अन्य प्राणी या समूह की मनःस्थितियों को प्रतीक रूप में समझने की क्षमता - समानुभूति कहलाता है।

[I]. रूढ़िवादिता धार्मिक, सामाजिक एवं नैतिक 'मान्यताओं का समुच्चय' है जो चिरकाल से प्रचलित मान्यताओं एवं आस्थाओं को बताता है। यह वैज्ञानिकता एवं तार्किकता पर आधारित नहीं होता है।

[J] भावात्मक प्रज्ञा 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता' का जटिल पक्ष है। बिना बाहरी दबाव एवं तनाव के अपनी भावनाओं एवं समझ को बनाये रखकर अपने कार्यों का निष्पादन करना है।

[K] नैतिक चिंता एक कोई कार्य या स्थिति जिसमें किसी नैतिक पक्ष का उल्लंघन हुआ हो, या होने की संभावना है, नैतिक चिंता कहलाती है।
उदाहरण - प्रीत के आहाता पर लाकप का कुटिल बाहिर जाना।

[L]. निष्पक्षता एक ऐसा मूल्य जो बिना किसी पूर्वाग्रह के 'वस्तुनिष्ठ' आधार पर 'तार्किक' रूप से चलने के लिए प्रेरित करे।
उदाहरण - पंच परमेश्वर में जुम्मन शेख और अलगू चौधरी के मामले में 'निष्पक्षता' से निर्णय लिया।

[M] सुशासन के आधारभूत मूल्य निम्नलिखित -
1. पारदर्शिता 2. जवाबदेहिता 3. निष्पक्षता आदि।

[N] भ्रष्टाचार अनैतिक कृत्यों का समुच्चय है जिसके द्वारा किसी नियम या कानून का उल्लंघन कर व्यक्तिगत या पारिवारिक लाभ अर्जित किया जाता है।
उदाहरण - कोयला घोटाला, आदर्श घोटाला।

'Harivansh'  Paper - IV  04/02/2021

'Thinkers + Case study + Others'

Q.1

[A] 'अर्थशास्त्र' की रचना 'कौटिल्य' ने की। यह राजनीतिक विषयों पर आधारित प्राचीन पुस्तक है।

[B] तुलसीदास एक 'समन्वयवादी' कवि थे। इन्होंने अपने ग्रन्थ में धर्म निरपेक्षता, मानववाद एवं 'कर्म' की प्रधानता का उल्लेख किया है।

[C]. केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य 1973 में 'मूल के - मूल्य' सर्वाधिक मानता था। मामले में उच्चतम न्यायालय ने संविधान के 'बुनियादी ढांचे' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

[D] सर्वोदय का सिद्धान्त 'जय प्रकाश नारायण' ने दिया था। सिद्धांत के अनुसार समाज के सभी वर्गों का सामाजिक - आर्थिक एवं राजनीतिक उदय था। जो सबके समान - अवसर पर आधारित है।

[E] 'चौखम्बा राज्य' के सिद्धांत का प्रतिपादन 'डॉ. राम मनोहर लोहिया' ने किया। यह राजनीतिक एवं आर्थिक - विकेन्द्रीकरण पर आधारित है।

चौखम्बा → [ग्राम] [मण्डल] प्रान्त केन्द्र

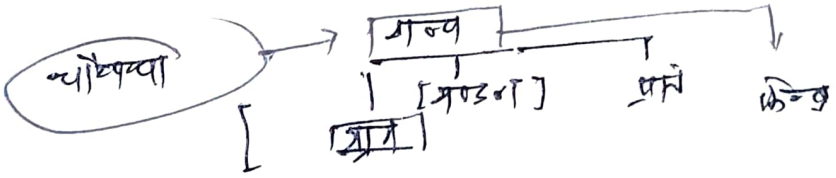

[F] - भारत के पहले 'शिक्षा मंत्री' 'मौलाना अबुल कलाम आजाद' की

[शिक्षा में योगदान] →
1. UGC की स्थापना
2. IIT की स्थापना
3. संगीत नाटक अकादमी
4. साहित्य अकादमी
5. ललित कला अकादमी